पाठ – 5 जन संघर्ष और आंदोलन

प्रश्नावली

Q1. दबाव समूह और आंदोलन राजनीति को किस तरह प्रभावित करते हैं?

उत्तर : दबाव समूह और आंदोलन राजनीति पर कई तरह से असर डालते हैं – · दबाव समूह और आंदोलन अपने लक्ष्य और गतिविधियों के लिए जनता का समर्थन और सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते हैं| इसके लिए ये सूचना अभियान चलाना, बैठक आयोजित करना या अर्ज़ी देने जैसे तरीकों का इस्तेमाल करते हैं | · ऐसे समूह अक्सर हड़ताल का सहारा लेते है ताकि सरकार उनकी माँगो की तरफ ध्यान देने के लिए बाध्य हो | · व्यवसाय समूह पेशेवर लॉबिस्ट नियुक्त करते हैं या महँगे विज्ञापनों का सहारा लेते हैं |

Q2. दबाव समूहों और राजनीतिक दलों के आपसी संबंधों का स्वरुप कैसा होता है, वर्णन करें|

उत्तर : दवाब समूह या तो राजनीतिक दल द्वारा बनाये जाते हैं या उनका नेतृत्व राजनीतिक दल के नेता करते हैं | उदाहरण के लिए, भारत के अधिकतर मज़दूर संगठन और छात्र संगठन या तो राजनीतिक दल द्वारा बनाये गए है या उन्हें राजनीतिक दलों का समर्थन प्राप्त हैं | अधिकतर दबाव समूहों का राजनीतिक दलों से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता | आंदोलनकारी समूह और दबाव समूह नए-नए मुद्दे उठाते है और राजनीतिक दल इन मुद्दों को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं |

Q3. दबाव समूहों की गतिविधियाँ लोकतांत्रिक सरकार के कामकाज में कैसे उपयोगी होती हैं?

उत्तर : लोकतांत्रिक सरकार के कामकाज में दबाव समूह महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे आम लोगों को अपनी राय देने का अवसर प्रदान करते हैं। कुछ मामलों में, सरकार अक्सर अमीर और शक्तिशाली लोगों के दबाव में आकर आम नागरिकों के लिए गलत फैसले ले लेती है। दबाव समूह सरकार को ऐसी नीतियां बनाने के लिए मजबूर करते हैं जो समाज के कुछ अन्य वर्गों को भी लाभान्वित कर सके। दबाव समूह आम नागरिक की जरूरतों से सरकार को अवगत कराते हैं |

Q4. दबाव समूह क्या हैं? कुछ उदाहरण बताइए |

उत्तर : जब लोग संगठन बनाकर अपने हित और अपनी माँगो के लिए सरकार के ख़िलाफ़ एकजुट होने का फैसला करते है तो ऐसे संगठन को दबाव समूह कहते हैं | दबाव समूह का निर्माण तब होता है जब समान पेशे, हित, आकांक्षा अथवा मत के लोग समान उद्देश्य को पाने के लिए एकजुट होते हैं | ये विरोध और प्रदर्शनों के माध्यम से सरकारी नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करते है। मजदूर संगठन, वकील, डाक्टरों के निकाय, FEDECOR और BAMCEF दबाव समूहों के उदाहरण हैं |

Q5. दबाव समूह और राजनीतिक दल में क्या अंतर हैं?

उत्तर : दबाव समूह और राजनीतिक दल में निम्नलिखित अंतर हैं – · दबाव समूह सीधे राजनीतिक शक्ति को नियंत्रित या साझा करने का लक्ष्य नहीं रखते हैं जबकि राजनीतिक दल सरकार पर नियंत्रण रखना चाहते है | · दबाव-समूह सत्ता में नहीं आना चाहते जबकि राजनीतिक दल सत्ता हासिल करना चाहते हैं | ·

दबाव समूह का निर्माण तब होता है जब समान पेशे, हित, आकांक्षा अथवा मत के लोग समान उद्देश्य को पाने के लिए एकजुट होते हैं | राजनीतिक दल के निर्माण के लिए लोगों की राजनीतिक विचारधारा समान होना चाहिए |

Q6. जो संगठन विशिष्ट सामाजिक वर्ग जैसे मज़दूर, कर्मचारी, शिक्षक और वकील आदि के हितों को बढ़ावा देने की गतिविधियाँ चलाते हैं उन्हें .... कहा जाता है।

उत्तर : जो संगठन विशिष्ट सामाजिक वर्ग जैसे मज़दूर, कर्मचारी, शिक्षक और वकील आदि के हितों को बढ़ावा देने की गतिविधियाँ चलाते हैं उन्हें <u>हित समूह या दबाव समूह</u> कहा जाता है।

Q7. निम्नलिखित में किस कथन से स्पष्ट होता है कि दबाव-समूह और राजनीतिक दल में अंतर होता है –

(क) राजनीतिक दल राजनीतिक पक्ष लेते हैं जबकि दबाव-समूह राजनीतिक मसलों की चिंता नहीं करते |
(ख) दबाव-समूह कुछ लोगों तक ही सीमित होते हैं जबकि राजनीतिक दल का दायरा ज्यादा लोगों तक फैला होता है |
(ग) दबाव-समूह सत्ता में नहीं आना चाहते जबकि राजनीतिक दल सत्ता हासिल करना चाहते हैं |
(घ) दबाव-समूह लोगों की लामबंदी नहीं करते जबकि राजनीतिक दल करते हैं।

उत्तर : (ग) दबाव-समूह सत्ता में नहीं आना चाहते जबकि राजनीतिक दल सत्ता हासिल करना चाहते हैं|

Q8. सूची I (संगठन और संघर्ष) का मिलान सूची II से कीजिए और सूचियों के नीचे दी गई सारणी से सही उत्तर चुनिए :

	सूची I	सूची II
1.	किसी विशेष तबके या समूह के हितों को बढ़ावा देने वाले संगठन	(क) आंदोलन
2.	जन-सामान्य के हितों को बढ़ावा देने वाले संगठन	(ख) राजनीतिक दल
3.	किसी सामाजिक समस्या के समाधान के लिए चलाया गया एक ऐसा संघर्ष जिसमें सांगठनिक संरचना हो भी सकती है और नहीं भी		(ग) वर्ग-विशेष के हित समूह
4.	ऐसा संगठन जो राजनीतिक सत्ता पाने की गरज से लोगों को लामबंद करता है	(घ) लोक कल्याणकारी हित समूह

	1	2	3	4
(क)	ग	घ	ख	क
(ख)	ग	घ	क	ख
(ग)	घ	ग	ख	क
(घ)	ख	ग	घ	क

उत्तर : (ख) 1. ग 2. घ 3. क 4. ख

Q9. सूची I का सूची II से मिलान करें जो सूचियों के नीचे दी गई सारणी में सही उत्तर हो चुनें :

	सूची I	सूची II
1.	दबाव समूह	(क) नर्मदा बचाओ आंदोलन
2.	लम्बी अवधि का आंदोलन	(ख) असम गण परिषद्
3.	एक मुद्दे पर आधारित आंदोलन	(ग) महिला आंदोलन
4.	राजनीतिक दल	(घ) खाद विक्रेताओं का संघ

	सूची I	सूची II
1.	किसी विशेष तबके या समूह के हितों को बढ़ावा देने वाले संगठन	(क) आंदोलन

2.	**जन-सामान्य के हितों को बढ़ावा देने वाले संगठन**	**(ख) राजनीतिक दल**
3.	**किसी सामाजिक समस्या के समाधान के लिए चलाया गया एक ऐसा संघर्ष जिसमें सांगठनिक संरचना हो भी सकती है और नहीं भी।**	**(ग) वर्ग-विशेष के हित समूह**
4.	**ऐसा संगठन जो राजनीतिक सत्ता पाने की गरज से लोगों को लामबंद करता है**	**(घ) लोक कल्याणकारी हित समूह**

उत्तर : (अ) 1. घ 2. ग 3. क 4. ख

Q10. दबाव-समूहों और राजनीतिक दलों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

(क) दबाव-समूह समाज के किसी खास तबके के हितों की संगठित अभिव्यक्ति होते हैं।
(ख) दबाव-समूह राजनीतिक मुद्दों पर कोई न कोई पक्ष लेते हैं।
(ग) सभी दबाव-समूह राजनीतिक दल होते हैं।
अब नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनें – (अ) क, ख और ग (ब) क और ख (स) ख और ग (द) क और ग

उत्तर : (ब) क और ख

Q11. मेवात हरियाणा का सबसे पिछड़ा इलाक़ा है। यह गुड़गाँव और फ़रीदाबाद ज़िले का हिस्सा हुआ करता था। मेवात के लोगों को लगा कि इस इलाके को अगर अलग ज़िला बना दिया जाए तो इस इलाके पर ज़्यादा ध्यान जाएगा। लेकिन, राजनीतिक दल इस बात में कोई रूचि नहीं ले रहे थे। सन् 1996 में मेवात एजुकेशन एंड सोशल ऑर्गेनाइजेशन तथा मेवात साक्षरता समिति ने अलग ज़िला बनाने की माँग उठाई। बाद में सन् 2000 में मेवात विकास सभा की स्थापना हुई। इसने एक के बाद एक जन-जागरण अभियान चलाए। इससे बाध्य होकर बड़े दलों यानी कांग्रेस और इंडियन नेशनल लोकदल को इस मुद्दे को अपना समर्थन देना पड़ा। उन्होंने फरवरी 2005 में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले ही कह दिया कि नया ज़िला बना दिया जाएगा। नया ज़िला सन् 2005 की जुलाई में बना। इस उदाहरण में आपको आंदोलन, राजनीतिक दल और सरकार के बीच क्या रिश्ता नज़र आता है? क्या आप कोई ऐसा उदाहरण दे सकते हैं जो इससे अलग रिश्ता बताता हो?

उत्तर : मेवात के उदाहरण से, हम अनुमान लगा सकते हैं कि आंदोलनों में ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें राजनीतिक दलों द्वारा अन-देखा किया गया है। राजनीतिक दल तब इन मांगों से प्रभावित हो सकते हैं जब वे अपने स्वयं के घोषणा-पत्रों को लागू करते हैं। अंत में, सत्ता में आने वाली पार्टी इन मांगों को पूरा करने वाले कदमों को लागू करती है। ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (AASU) के नेतृत्व में छह साल लंबे असम आंदोलन (1979-1985) का उद्देश्य बांग्लादेश से असम में विदेशियों की घुसपैठ के खिलाफ था। इस

आंदोलन के अंत में, राज्य विधानसभा भंग कर दी गई, सरकार को खारिज कर दिया गया, और नए सिरे से चुनाव हुए। असम गण परिषद, का गठन एएएसयू से हुआ, चुनाव लड़ा और जीता, जिससे असम सरकार बनी।